eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

भारत में महिलाओं के कानूनी और संवैधानिक अधिकार

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 15 June 2024 Accepted & Reviewed: 25 June 2024 Published: 30 June 2024

Abstract

यह शोध पत्र भारत में महिलाओं के कानूनी और संवैधानिक अधिकारों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय संविधान ने महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्रदान किए हैं, फिर भी समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता और भेदभाव की समस्याएं बनी हुई हैं। इस अध्ययन में महिलाओं के अधिकारों से संबंधित संवैधानिक उपबंध, कानूनी सुधार, न्यायिक दृष्टिकोण, और सरकारी नीतियों का मूल्यांकन किया गया है। इसके अलावा, यह शोध पत्र महिलाओं के अधिकारों को सुनिश्चित करने में सामने आने वाली चुनौतियों और उनके समाधान की संभावनाओं पर भी चर्चा करता है।

प्रमुख शब्द– महिला अधिकार, भारतीय संविधान, लैंगिक समानता, कानूनी सुधार, न्यायिक दृष्टिकोण, सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण।

Introduction

भारत में महिलाओं की स्थिति प्राचीन काल से ही समाज के विभिन्न पहलुओं से प्रभावित रही है। वैदिक काल में महिलाओं को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था, लेकिन समय के साथ पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने महिलाओं के अधिकारों को सीमित कर दिया। औपनिवेशिक काल में महिलाओं की स्थिति और भी जटिल हो गई, लेकिन समाज सुधारकों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रयासों से महिलाओं के अधिकारों को लेकर जागरूकता बढ़ी। स्वतंत्रता के बाद, भारतीय संविधान ने महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्रदान किए और उन्हें शिक्षा, रोजगार, और राजनीति में भागीदारी के लिए अवसर उपलब्ध कराए। हालांकि, आज भी समाज में महिलाओं को अनेक सामाजिक, आर्थिक, और कानूनी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। लैंगिक भेदभाव, घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, कार्यस्थल पर उत्पीड़न और संपत्ति के अधिकारों में असमानता जैसी समस्याएं बनी हुई हैं।

यह शोध पत्र भारतीय संविधान और कानूनी प्रावधानों के माध्यम से महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करता है। साथ ही, यह महिलाओं के संवैधानिक अधिकारों, कानूनी सुधारों, न्यायिक दृष्टिकोण और सरकारी नीतियों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है।

भारतीय संविधान और महिलाओं के अधिकार– भारतीय संविधान महिलाओं को कई मौलिक अधिकार प्रदान करता है। कुछ महत्वपूर्ण प्रावधान इस प्रकार हैं–

भारतीय संविधान का निर्माण ऐसे समय में हुआ जब समाज में महिलाओं की स्थिति कमजोर थी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी, सरोजिनी नायडू, सावित्रीबाई फुले और अन्य समाज सुधारकों ने महिलाओं के अधिकारों की वकालत की। संविधान सभा में महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण थी, जिन्होंने महिलाओं के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए कई प्रस्ताव रखे।

भारतीय संविधान महिलाओं को कई मौलिक अधिकार प्रदान करता है। कुछ महत्वपूर्ण प्रावधान इस प्रकार हैं।

अनुच्छेद 14– कानून के समक्ष समानता का अधिकार।

अनुच्छेद 15 (1)– धर्म, जाति, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव का निषेध।

अनुच्छेद 15 (3)– महिलाओं और बच्चों के लिए विशेष उपबंधों की अनुमति।

अनुच्छेद 16– रोजगार में समान अवसर।

अनुच्छेद 39 (क)– समान कार्य के लिए समान वेतन।

अनुच्छेद 42– प्रसूति अवकाश और मातृत्व सुविधाएँ।

अनुच्छेद 243 D और 243 T - पंचायती राज और नगर निकायों में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण।

महिलाओं के अधिकारों से संबंधित संवैधानिक संशोधन– भारत सरकार ने समय–समय पर महिलाओं के अधिकारों को सशक्त करने के लिए संविधान में कई संशोधन किए हैं–

73वां और 74वां संविधान संशोधन (1992), पंचायती राज संस्थाओं और शहरी निकायों में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण।

86वां संविधान संशोधन (2002), 6–14 वर्ष के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा, जिससे लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा मिला।

संविधान (108वां संशोधन) विधेयक, संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण (अब भी लंबित)।

न्यायिक दृष्टिकोण और महत्वपूर्ण निर्णय– भारतीय न्यायपालिका ने महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा हेतु कई ऐतिहासिक फैसले दिए हैं–

विषाका बनाम राजस्थान राज्य (1997), कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के विरुद्ध दिशा–निर्देश।

शाह बानो केस (1985), मुस्लिम महिलाओं को भरण–पोषण का अधिकार।

लिली थॉमस बनाम भारत सरकार (2013), बहुविवाह और जबरन धर्मांतरण पर रोक।

इंदिरा साहनी बनाम भारत सरकार (1992), महिलाओं के लिए आरक्षण नीति को संवैधानिक वैधता प्रदान की।

महिलाओं के कानूनी अधिकार– महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए कई महत्वपूर्ण कानून बनाए गए हैं, जिनमें शामिल हैं–

महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए कई महत्वपूर्ण कानून बनाए गए हैं, जिनमें शामिल हैं–

महिला सुरक्षा और सम्मान से जुड़े कानून

दहेज निषेध अधिनियम, 1961, दहेज लेने और देने पर प्रतिबंध लगाता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

गर्भपात अधिनियम, 1971, महिलाओं को सुरक्षित गर्भपात का अधिकार प्रदान करता है।

घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005, घरेलू हिंसा से महिलाओं की रक्षा करता है।

कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न (निवारण, निषेध और सुधार) अधिनियम, 2013, कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम, 2009, 6 से 14 वर्ष की लड़कियों के लिए मुफ्त शिक्षा की गारंटी देता है।

किशोर न्याय अधिनियम, 2015, बच्चों और किशोरियों के प्रति हिंसा की रोकथाम करता है।

महिलाओं की संपत्ति और उत्तराधिकार से जुड़े कानून

हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 (संशोधित, 2005), बेटियों को पिता की संपत्ति में समान अधिकार देता है।

मुस्लिम व्यक्तिगत कानून, महिलाओं को विवाह, तलाक और संपत्ति के संबंध में कुछ विशेष अधिकार देता है।

विवाह कानून (संशोधन) अधिनियम, 2005, महिलाओं को तलाक के मामलों में बेहतर अधिकार प्रदान करता है।

मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961 (संशोधित, 2017), कार्यरत महिलाओं को मातृत्व अवकाश और अन्य सुविधाएँ प्रदान करता है।

महिलाओं के अधिकारों से जुड़े हालिया संशोधन–

मुस्लिम महिलाओं (विवाह अधिकार संरक्षण) अधिनियम, 2019, तीन तलाक (तलाक–ए–बिद्दत) को अवैध और दंडनीय अपराध घोषित किया।

बाल विवाह निषेध (संशोधन) विधेयक, 2021, महिलाओं के विवाह की न्यूनतम आयु को 18 से बढ़ाकर 21 वर्ष करने का प्रस्ताव।

गृह कार्य करने वाली महिलाओं के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना (2022), असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के लिए सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास।

कानूनी अधिकारों के क्रियान्वयन में आने वाली व्यावहारिक चुनौतियाँ–

कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन न होना, महिलाओं के विरुद्ध अपराधों के मामलों में धीमी कानूनी प्रक्रिया।

सामाजिक रूढ़िवादिता और पितृसत्तात्मक मानसिकता, कई क्षेत्रों में महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों की जानकारी नहीं होती।

न्यायपालिका में मामलों की धीमी प्रगति, महिलाओं से संबंधित कानूनी मामलों का वर्षों तक लंबित रहना।

महिला पुलिस कर्मियों और सहायता केंद्रों की कमी, पीड़ित महिलाओं के लिए प्रभावी सहायता प्रणाली का अभाव।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

आर्थिक निर्भरता, कई महिलाएँ कानूनी कार्यवाही में शामिल होने से बचती हैं क्योंकि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होतीं।

न्यायिक निर्णयों और उनके प्रभाव

भारतीय न्यायपालिका ने महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा हेतु कई ऐतिहासिक फैसले दिए हैं–

विषाका बनाम राजस्थान राज्य (1997), कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के विरुद्ध दिशा–निर्देश।

शाह बानो केस (1985), मुस्लिम महिलाओं को भरण–पोषण का अधिकार।

लिली थॉमस बनाम भारत सरकार (2013), बहुविवाह और जबरन धर्मांतरण पर रोक।

इंदिरा साहनी बनाम भारत सरकार (1992), महिलाओं के लिए आरक्षण नीति को संवैधानिक वैधता प्रदान की।

निर्भया केस (2012), इस मामले के बाद बलात्कार विरोधी कानूनों में कठोर बदलाव किए गए।

शायरा बानो केस (2017), तीन तलाक को असंवैधानिक करार दिया गया।

न्यायिक दृष्टिकोण और महत्वपूर्ण निर्णय–

भारतीय न्यायपालिका ने महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा हेतु कई ऐतिहासिक फैसले दिए हैं, जैसे–

– ''विषाका बनाम राजस्थान राज्य (1997),'' कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के विरुद्ध दिशा–निर्देश।

– ''शाह बानो केस (1985),'' मुस्लिम महिलाओं को भरण–पोषण का अधिकार।

– ''लिली थॉमस बनाम भारत सरकार (2013),'' बहुविवाह और जबरन धर्मांतरण पर रोक।

– ''इंदिरा साहनी बनाम भारत सरकार (1992),'' महिलाओं के लिए आरक्षण नीति को संवैधानिक वैधता प्रदान की।

महिलाओं के अधिकारों को सुनिश्चित करने की चुनौतियाँ–

महिलाओं के अधिकारों को लागू करने में कई सामाजिक और कानूनी बाधाएँ हैं–

–महिलाओं के अधिकारों को लागू करने में कई सामाजिक और कानूनी बाधाएँ हैं–

सामाजिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियाँ–

- पितृसत्तात्मक मानसिकता और लैंगिक भेदभाव, पारंपरिक समाज में महिलाओं की भूमिका को सीमित करने वाली सोच।
- सामाजिक रूढ़िवादिता, महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और स्वतंत्रता को बाधित करने वाली प्रथाएँ।
- महिला विरोधी कुप्रथाएँ, जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, ऑनर किलिंग आदि।
- घरेलू हिंसा और उत्पीड़न, परिवारों के भीतर महिलाओं के खिलाफ हिंसा की घटनाएँ।

कानूनी एवं प्रशासनिक चुनौतियाँ–

- कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन न होना, पुलिस और न्यायिक प्रणाली में भ्रष्टाचार और लापरवाही।

- मुकदमों की लंबी अवधि, महिलाओं से जुड़े मामलों में न्याय मिलने में देरी।
- पीड़ित महिलाओं को सहायता की कमी, कानूनी जागरूकता और सरकारी सहायता की सीमित उपलब्धता।
- महिला पुलिस कर्मियों और सहायता केंद्रों की कमी।

आर्थिक एवं शैक्षिक चुनौतियाँ–

शिक्षा की कमी, महिलाओं में शिक्षा के निम्न स्तर के कारण जागरूकता की कमी।

आर्थिक निर्भरता, महिलाओं की वित्तीय आत्मनिर्भरता की कमी उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने से रोकती है।

कार्यस्थल पर असमानता, वेतन में असमानता, कार्यस्थल पर उत्पीड़न, और महिलाओं के करियर में बाधाएँ।

डिजिटल एवं तकनीकी चुनौतियाँ–

साइबर अपराध, महिलाओं के खिलाफ ऑनलाइन उत्पीड़न, अश्लील तस्वीरों का दुरुपयोग, और ब्लैकमेलिंग।

डिजिटल साक्षरता की कमी, महिलाओं में तकनीकी जागरूकता की कमी जिससे वे साइबर अपराधों से अनभिज्ञ रहती हैं।

महिलाओं के अधिकारों को प्रभावी बनाने के समाधान– महिला अधिकारों की सुरक्षा और उनके सशक्तिकरण के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं–

महिला अधिकारों की सुरक्षा और उनके सशक्तिकरण के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं।

शिक्षा और जागरूकता अभियान–

महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए विद्यालयों, कॉलेजों और कार्यस्थलों पर जागरूकता कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है।

डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देकर महिलाओं को साइबर अपराधों से बचाने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

कानूनी प्रक्रियाओं को सरल और तेज बनाना–

महिला हेल्पलाइन, त्वरित अदालतें और विधिक सहायता सेवाओं का विस्तार किया जाए। न्याय प्रणाली में महिलाओं के लिए विशेष अदालतें स्थापित की जाएं, जहां यौन उत्पीड़न और घरेलू हिंसा से जुड़े मामलों का शीघ्र समाधान किया जा सके।

महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देना–

- महिलाओं को स्वरोजगार और उद्यमशीलता के लिए आर्थिक सहायता दी जाए।
- महिला स्वयं सहायता समूहों को वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
- महिलाओं के लिए विशेष रोजगार योजनाएं चलाई जाएं और समान वेतन सुनिश्चित किया जाए।

सरकारी योजनाओं और नीतियों का प्रभावी कार्यान्वयन–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 06, June 2024

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, उज्ज्वला योजना, सुकन्या समृद्धि योजना आदि का प्रभावी ढंग से कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जाए।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सुरक्षा और स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं को प्राथमिकता दी जाए।

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देना

संसद और विधानसभाओं में 33% आरक्षण लागू किया जाए।

पंचायत और स्थानीय निकायों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाए।

कार्यस्थल पर लैंगिक समानता सुनिश्चित करना– महिलाओं को कार्यस्थल पर सुरक्षा प्रदान करने के लिए सख्त नियमों का पालन किया जाए। यौन उत्पीड़न निवारण समितियों को प्रभावी बनाया जाए और उनके कार्यों की निगरानी की जाए।

सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन को बढ़ावा देना– मीडिया और सिनेमा के माध्यम से महिलाओं की सकारात्मक छवि को बढ़ावा दिया जाए। पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर लड़कों को भी लैंगिक समानता का पाठ पढ़ाया जाए। दहेज प्रथा, बाल विवाह और ऑनर किलिंग जैसी कुप्रथाओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए।

साइबर अपराधों से महिलाओं की सुरक्षा– साइबर हेल्पलाइन और कानून प्रवर्तन एजेंसियों को मजबूत किया जाए। सोशल मीडिया पर उत्पीड़न के मामलों की त्वरित जांच और दंड की प्रक्रिया सुनिश्चित की जाए।

हेल्थकेयर और मातृत्व सुविधाओं में सुधार– महिलाओं के लिए मुफ्त स्वास्थ्य जांच और प्रसवकालीन सुविधाएं बढ़ाई जाएं। ग्रामीण क्षेत्रों में मातृत्व सुविधाओं का विस्तार किया जाए और सरकारी अस्पतालों में महिलाओं के लिए विशेष सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

भारत में महिला कानून, प्रयोग और दुरुपयोग–

- महिलाओं को सशक्त करने और न्याय प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका
- कार्यस्थलों पर सुरक्षा और समानता सुनिश्चित करना
- घरेलू हिंसा और दहेज प्रथा के खिलाफ कानूनी संरक्षण

महिला कानूनों के दुरुपयोग के उदाहरण–

- झूठे दहेज उत्पीड़न के मामले (498। आईपीसी का दुरुपयोग)
- झूठे यौन उत्पीड़न और बलात्कार के आरोप
- घरेलू हिंसा कानूनों का अनुचित उपयोग
- कार्यस्थलों पर गलत शिकायतों से पुरुषों की छवि प्रभावित होना

कानूनी दुरुपयोग को रोकने के उपाय–

- झूठे मामलों की निष्पक्ष जांच और कठोर दंड
- पुरुषों के अधिकारों की भी रक्षा करने के लिए संतुलित कानून
- न्यायपालिका में त्वरित सुनवाई और गलत आरोपों की समीक्षा

- महिला कानूनों के उपयोग की निगरानी और निष्पक्ष क्रियान्वयन

भारत में महिलाओं के संवैधानिक और कानूनी अधिकारों की सुरक्षा के लिए कई प्रावधान और कानून मौजूद हैं, लेकिन उनके प्रभावी कार्यान्वयन में अभी भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। समाज में लैंगिक समानता स्थापित करने के लिए केवल कानूनी प्रावधान ही नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आवश्यक है। महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना और सरकारी नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करना ही इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

संदर्भ सूची–

1. "Women and Law in India" – Flavia Agnes
2. "Law and Gender Inequality: The Politics of Women's Rights in India" – Flavia Agnes
3. "Gender Justice and Law in India" – Mamta Rao
4. "Women and Social Reform in Modern India" – Sumit Sarkar & Tanika Sarkar
5. "Feminism and Contemporary Indian Women's Writing" – E. Dawson Varughese
6. "Indian Constitutional Law" – M.P. Jain
7. "The Constitution of India" – P.M. Bakshi
8. "Women's Rights in India: Contemporary Debates" – Nandini Sinha Kapur
9. "Crime Against Women and The Law" – Anjani Kant
10. "Empowerment of Women in India" – G.S. Bhargava
11. भारतीय संविधान (संशोधन सहित)
12. उच्चतम न्यायालय के ऐतिहासिक फैसले
13. विधि आयोग की रिपोर्टें
14. महिला सशक्तिकरण पर सरकारी दस्तावेज
15. सामाजिक न्याय मंत्रालय और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की रिपोर्ट्स